ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

14-12-2024

सन्तुष्ट आत्मायें सदा निःस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेंगी; किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेंगी -न भाग्यविधाता पर, न ड्रामा पर, न व्यक्ति पर, न शरीर के हिसाब-किताब पर कि मेरा शरीर ही ऐसा है। वे सदा निःस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाली होंगी।

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

Contented souls would always experience everyone to be altruistic and innocent (free from blame). They would never blame anyone for anything; they wouldn't blame the Bestower of Fortune, nor the drama or any person, nor the karmic account of their body, thinking: "My body is like that anyway." They would always have an altruistic and innocent attitude and vision.